अश्वनाल केकड़े और समानुभूति

चार्ल्स एइज़ेंस्टीन

क्या वर्तमान पारिस्थितिक संकट के एक या अनेक कारण हैं? समस्या-समाधान सम्बन्धी हमारे सामान्य दृष्टिकोण इस चुनौती को कैसे सम्बोधित करते हैं? इसे सम्बोधित करने में स्थानीय स्थलों के प्रति समानुभूति और उनका ख़्याल रखने की क्या भूमिका है?

"जब हम बच्चे थे तो वह मुहाना समुद्री शैवाल और ईल से भरा रहता था। यह सभी प्रकार के वन्य जीवन से भी भरा हुआ था। केकड़े, घोंघे, अश्वनाल केकड़े - ठीक वहाँ एक सीपियों की परत थी - एक बार उस तालाब में तैरते वक़्त मेरा सामना एक ईल से हुआ", स्टेला ने कहा।

स्टेला उस स्थान के बारे में बात कर रही थी जहाँ नैरो नदी अमरीका के रोड आइलैंड में नारगांसेट खाड़ी से मिलती है, जब वह बड़ी हो रही थी तो यह उसका एक नियमित ठिकाना था। यह एक सुन्दर जगह है और यदि मेरी पत्नी ने मुझे नहीं बताया होता तो मुझे पता ही नहीं चलता कि यह स्थान इतना जीवनविहीन हो गया है।

हम दोनों में से कोई भी यह नहीं जानता कि ईल क्यों लुप्त हो गई। हमने एक दुःखद क्षण साझा किया और फिर स्टेला के मन में एक और स्मृति उभरी जो इसे किसी तरह स्पष्ट करती प्रतीत हो रही थी। वह और उसकी दोस्त बेवर्ली कभी-कभी सुबह समुद्र तट के उस हिस्से में जाती थीं, इस फेरी को वे 'बचाव अभियान' कहा करती थीं। रात में, कोई आता और रेत पर रेंगने वाले सभी अश्वनाल केकड़ों को पलट देता और उन्हें मरने के लिए असहाय छोड़ जाता। स्टेला और बेवर्ली उन्हें फिर से पलटकर सीधा कर देतीं। उसने कहा, "जो कोई भी यह कर रहा था, उसके पास ऐसा करने का कोई कारण नहीं था। यह एक संवेदनहीन हत्या थी।"

यह उस तरह की कहानी है जो मुझे यह महसूस कराती है मानो मैं ग़लत ग्रह पर पहुँच गया हूँ।

इस बार हमें कोई अश्वनाल केकड़ा नहीं दिखा। उनका दिखाई देना अब यहाँ एक दुर्लभ दृश्य है। मुझे नहीं पता कि ऐसा इसलिए है कि या तो लोगों ने उनमें से बहुत-से केकड़ों को मार डाला है या पारिस्थितिकी तंत्र के सामान्य ह्रास के कारण ऐसा हुआ है। या शायद यह अत्यधिक कीटनाशक, अत्यधिक कृषि, भूमि विकास, फार्मास्युटिकल अवशेष या विकास या जलवायु परिवर्तन फलस्वरूप वर्षा के

चित्र-1 : अश्वनाल केकड़ा कैसा दिखता है?
Credits: James St. John. URL: https://www.flickr.com/photos/jsjgeology/24605087516. License: CC-BY 2.0.

बदलते स्वरूप (पैटर्न) के कारण ऐसा हुआ है... हो सकता है कि अश्वनाल केकड़े इनमें से किसी एक के प्रति संवेदनशील रहे हों या हो सकता है कि वे जिन प्राणियों को खाते हैं वे इनके प्रति संवेदनशील रहे हों। या यह हो सकता है कि कोई सूक्ष्मजीव संवेदनशील रहा हो और सीप-घोंघो जैसे कवच धारी जीवों पर प्रजनन करता है जो समुद्री शैवाल (kelp) पर रहते हैं, जो अश्वनाल केकड़े का पोषण करने वाली खाद्य शृंखला में थोड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुझे पूरा यक़ीन है कि अश्वनाल केकड़ों और ईल के एक-एक करके मरने की वैज्ञानिक व्याख्या जो भी हो, असली कारण स्टेला द्वारा वर्णित बेतुकी हत्या ही है। मेरा अभिप्राय हत्या वाले भाग से नहीं, बल्कि संवेदनहीनता वाले भाग से है - हमारी संवेदना प्रणाली को लकवा लगना और हमारी समानुभूति का क्षीण होना।

किसी कारण तक पहुँचने की जल्दबाज़ी

केकड़े, समुद्री शैवाल और ईल सब लुप्त हो गए हैं। मन कारण की खोज करता है - समझने के लिए, दोष देने के लिए और फिर ठीक करने के लिए - लेकिन एक जटिल अरेखीय प्रणाली में कारणों को अलग करना अक्सर असम्भव होता है।

जटिल प्रणालियों की यह विशेषता समस्या-समाधान के लिए हमारी संस्कृति के सामान्य दृष्टिकोण से टकराती है, जिसमें सबसे पहले आता है कारण, अपराधी, रोगाणु, कीट, बुरे व्यक्ति, बीमारी, ग़लत विचार या ख़राब वैयक्तिक/ व्यक्तिगत गुणवत्ता की पहचान करना और फिर उस अपराधी पर हावी होना, उसे हराना या उसका विनाश करना। समस्या : अपराध; समाधान : अपराधियों को जेल में बन्द करना। समस्या : आतंकवादी कृत्य; समाधान : आतंकवादियों को मार डालना। समस्या : अप्रवासन; समाधान : अप्रवासियों को बाहर रखना। समस्या : लाइम रोग; समाधान : रोगज़नक़ की पहचान करना और उसे ख़त्म करने का तरीक़ा खोजना। समस्या : अज्ञानता; समाधान : शिक्षा। समस्या : जलवायु परिवर्तन; समाधान : कार्बन उत्सर्जन घटाना। समस्या : मोटापा; समाधान : कैलोरी का सेवन घटाना।

आप उपरोक्त उदाहरणों से देख सकते हैं कि कैसे न्यूनीकरणवादी सोच पूरे राजनीतिक परिदृश्य में व्याप्त है। जब कोई अनुमानित कारण स्पष्ट नहीं होता है तो हम असहज महसूस करने लगते हैं, फिर अक्सर 'कारण' के लिए कोई सुविधाजनक उम्मीदवार ढूँढ़ने की जल्दबाज़ी करते हैं और उसके विरुद्ध

चित्र-2 : ईल कैसी दिखती है?
Credits: James St. John. URL: https://www.flickr.com/photos/jsjgeology/52520155186/in/photostream/. License: CC-BY 2.0.

लड़ाई छेड़ देते हैं। शायद हम जिस चीज़ का सामना कर रहे होते हैं, वह है हमारे सामने आने वाले कई संकटों के कारण हमारी मूल समस्या समाधान रणनीति की ख़राबी, जो स्वयं गहरे वर्णनों पर निर्भर होती है, जिसे मैं 'पृथक्करण की कहानी' कहता हूँ। इस क्रम में एक यह विचार है कि प्रकृति हमारे बाहर मौजूद 'कुछ' है जो हमारे नियंत्रण के अधीन है और मानव प्रगति उस नियंत्रण के अन्तहीन विस्तार में निहित है।

मुहाना धीरे-धीरे ख़त्म हो जाने के बारे में जानकर मुझे स्वयं अपराधी को खोजने, नफ़रत करने के लिए किसी को खोजने और दोष देने के लिए किसी को खोजने की उत्तेजना महसूस हुई। काश हमारी समस्याओं का समाधान इतना आसान होता! यदि हम कारण के रूप में किसी एक चीज़ की पहचान कर सकें तो समाधान पर पहुँचना बहुत अधिक सुगम हो जाएगा। लेकिन जो आसान/ आरामदायक मालूम पड़ता है वह हमेशा सच नहीं होता। क्या होगा यदि कारण में हज़ारों परस्पर सम्बन्धित चीज़ें शामिल हों जो हम सभी की तरफ़ और हमारी जीवनशैली की तरफ़ इशारा करती हों? क्या होगा अगर यह इतना सर्वव्यापी हो और जीवन (जैसा कि हम इसे जानते हैं) के साथ इतना गुँथा हुआ हो कि जब हमें इसकी विशालता की झलक मिले तो हम नहीं समझ पाएँ कि क्या करना है?

विनम्र, शक्तिहीन अनभिज्ञता का वह क्षण, जहाँ होते आ रहे नुक़सान का दु:ख हमें दृढ़ता से प्रभावित करता है और हम सहज समाधान करने के प्रयास से बच नहीं सकते, एक शक्तिशाली और आवश्यक क्षण होता है। इसमें हमारे अन्दर इतनी गहराई तक पहुँचने की शक्ति होती है कि यह लम्बे समय से चले आ रहे हमारे देखने के तरीक़ों और प्रतिक्रिया के उन स्वरूपों को मिटा सकता है जिनकी जड़ें गहरी होती हैं। यह हमें नया दृष्टिकोण प्रदान करता है और यह डर के उस शिकंजे को ढीला करता है जो सामान्य स्थिति में हमें पकड़े रखता है। तैयार समाधान एक नशीले पदार्थ के समान होता है जो घाव को ठीक किए बिना दर्द से ध्यान हटा देता है।

आपने 'चलो इसके बारे में कुछ करें' में त्वरित राहत के मादक प्रभाव का अनुभव किया होगा। निःसन्देह उन मामलों में जहाँ कारण और प्रभाव सरल हों और हम जानते हों कि वास्तव में क्या करना है, त्वरित राहत उचित है। यदि आपके पैर में फाँस चुभी है, उस फाँस को निकाल दीजिए। लेकिन अधिकांश स्थितियाँ उससे कहीं अधिक जटिल होती हैं, जिनमें इस ग्रह पर मौजूद पारिस्थितिक संकट भी शामिल है। ऐसे मामलों में, सबसे सुविधाजनक, सतही रूप से स्पष्ट दिखाई देने वाले कारण/ कारक घटना की ओर भागने की आदत हमें अधिक सार्थक प्रतिक्रिया/ जवाबी कार्रवाई से भटका देती है। यह हमें उसके अन्दर और उसके अन्दर और उसके अन्दर देखने से रोकती है।

उन अश्वनाल केकड़े पलटाने वालों की संवेदनाहीन क्रूरता के पीछे क्या है? लॉन रसायनों (बाग़-बग़ीचों में इस्तेमाल किए जाने वाले उर्वरक, कीटनीशी, खरपतवार वग़ैरह) के बड़े पैमाने पर उपयोग के पीछे क्या कारण है? विशाल उपनगरीय भवनों के पीछे क्या है? रासायनिक कृषि की व्यवस्था? तटीय जल में अत्यधिक मछली पकड़ना? हम अपनी सभ्यता की मूलभूत प्रणालियों, कहानियों और मनोविज्ञान तक जा पहुँचते हैं।

क्या मैं यह कह रहा हूँ कि कभी भी सीधी कार्रवाई ना करें क्योंकि, आख़िरकार, प्रणालीगत जड़ें इतनी गहरी हैं कि उनकी थाह नहीं पाई जा सकती? नहीं। अनभिज्ञता, उलझन और दु:ख हमें जहाँ ले जाता है वह एक ऐसी जगह होती है जहाँ हम एक साथ कई स्तरों पर कार्य कर सकते हैं, क्योंकि हम कारण के प्रत्येक आयाम को एक बड़ी तस्वीर के भीतर देखते हैं और हम आसान, झूठे समाधानों पर कूद नहीं पड़ते हैं।

समस्त कारणों की जननी

जब मैं मुहाना ख़त्म होने के कारणों के बारे में सवाल उठा रहा था तो आपके दिमाग़ में एक परिकल्पना कौंध गई होगी - जलवायु परिवर्तन, जो आज लगभग हर पर्यावरणीय समस्या के लिए ज़िम्मेदार मानी जाती है। 'अगर हम कारण के रूप में किसी एक चीज़ की पहचान कर सकें तो समाधान उतना ही अधिक सुलभ होगा।' उदाहरण के लिए, मैंने गूगल पर 'जलवायु परिवर्तन पर मृदा क्षरण का प्रभाव' खोजा तो परिणामों के पहले दो पृष्ठों में मेरी खोज के विपरीत परिणाम थे - मृदा क्षरण पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव।

जैव विविधता के सन्दर्भ में भी यही बात लागू होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह सच है कि जलवायु परिवर्तन सभी प्रकार की पर्यावरणीय समस्याएँ बढ़ाता है, लेकिन एक जटिल समस्या के लिए एकल कारण का नाम देने की जल्दबाज़ी से हमें बचना चाहिए। स्वरूप जाना-पहचाना है। क्या आपको लगता है कि 'जलवायु परिवर्तन के ख़िलाफ़ लड़ाई' जो एक दुश्मन, CO_2, की पहचान से शुरू होती है, 'आतंक के ख़िलाफ़ लड़ाई', 'ड्रग्स के ख़िलाफ़ लड़ाई' या 'ग़रीबी के ख़िलाफ़ लड़ाई' की तुलना में बेहतर परिणाम लाएगी?

अब मैं निश्चित रूप से यह नहीं कह रहा हूँ कि जीवाश्म ईंधन का उपयोग करना छोड़ देना एक 'आसान, ग़लत समाधान' है। हालाँकि, यह उतना व्यापक परिवर्तन प्रस्तुत नहीं करता जितना परिवर्तन यहाँ, वहाँ और हर जगह पारिस्थितिकी विनाश को रोकने के लिए आवश्यक है। अनुमानतः, हम औद्योगिक सभ्यता को विद्युत शक्ति प्रदान करने के लिए वैकल्पिक ईंधन स्रोत ढूँढ़कर कार्बन उत्सर्जन समाप्त कर सकते हैं। गहराई से जाँच करने पर यह अवास्तविक प्रतीत हो सकता है, लेकिन कम-से-कम यह कल्पना की जा सकती है कि हमारी जीवन शैली कमोबेश अपरिवर्तित बनी रह सकती है। पर पारिस्थितिकी तंत्र के विनाश के व्यापक विषय में ऐसा नहीं है,

जिसमें आधुनिक जीवन पद्धति का हर पहलू शामिल है - खदानें, पाषाण खदानें, कृषि, फार्मास्यूटिकल्स, सैन्य प्रौद्योगिकी, वैश्विक परिवहन, आवास...।

उसी प्रकार, जलवायु परिवर्तन पर अविश्वसनीयता की घटना मानवजनित ग्लोबल वार्मिंग पर पूरी तरह से अविश्वास की सम्भावना को प्रमाणित करती है, क्योंकि इसके लिए आवश्यक है कि हम कई घटनाओं को एक ही सिद्धान्त में एकीकृत करें जो वैज्ञानिकों के प्रमाण पर निर्भर करता है। नैरो नदी का मुहाना या आपके बचपन के नष्ट हुए स्थानों में से किसी एक के साथ कुछ हुआ है, यह विश्वास करने के लिए ऐसी किसी आस्था की आवश्यकता नहीं है। यह निर्विवाद है और चाहे हम किसी चीज़ पर विश्वास करें या न करें, इसमें हमारे अन्दर गहराई तक प्रवेश करने की शक्ति है।

ऐसा प्रतीत हो सकता है कि मैं जलवायु परिवर्तन की कीमत पर स्थानीय पर्यावरणीय मुद्दों पर पुनः ध्यान केन्द्रित करने की वकालत कर रहा हूँ, लेकिन यह एक ग़लत और ख़तरनाक विभेद है। जैसा कि मैंने जलवायु परिवर्तन पर शोध किया है, यह तेज़ी-से स्पष्ट होता जा रहा है कि जलवायु परिवर्तन में जंगलों की कटाई, औद्योगिक कृषि, आर्द्रभूमि विनाश, जैव विविधता की क्षति, अत्यधिक मछली पकड़ने और भूमि और समुद्र के प्रति अन्य अनुचित व्यवहार का योगदान अधिकांश वैज्ञानिकों के अनुमान से कहीं अधिक रहा है। इसी तरह, जलवायु नियंत्रित करने और कार्बन अवशोषित करने के लिए अक्षुण्ण पारिस्थितिक तंत्र की क्षमता जितनी आँकी गई थी उससे कहीं अधिक है। इसका अर्थ यह है कि भले ही हम कार्बन उत्सर्जन में कटौती करके उसे शून्य स्तर पर ले आएँ, लेकिन हम हर जगह स्थानीय स्तर पर चल रहे पारिस्थितिक विनाश का रुख़ नहीं पलटते हैं, तो भी जलवायु धीमे विनाश का शिकार हो जाएगी।

मेरे उपरोक्त गूगल सर्च परिणामों में निहित दावे/ पूर्वधारणा के विपरीत, वैश्विक स्वास्थ्य स्थानीय के स्वास्थ्य पर निर्भर करते हैं। जलवायु संकट का कोई वैश्विक समाधान शायद सम्भव नहीं हो, सिवाय इसके कि हमें वैश्विक स्तर पर लाखों स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र बहाल और संरक्षित करने की आवश्यकता है। विश्व स्तर पर उपयुक्त समाधानों पर ध्यान केन्द्रित करने से स्थानीय पर्यावरणीय मुद्दों का महत्त्व कम लगने लगता है। हम इसे पहले से ही 'हरित' को 'कम कार्बन' के रूप में पहचानने की बढ़ती प्रवृत्ति के रूप में देख रहे हैं। इसलिए, हमें वैश्वीकृत समाधानों को लागू करने में जल्दबाज़ी करने से सावधान रहना चाहिए, जिसमें वैश्विक संस्थानों को और भी अधिक शक्ति प्रदान करना अपरिहार्य है। वास्तव में, वैश्विक कार्बन नीतियाँ पहले ही जलविद्युत और जैव ईंधन परियोजनाओं के माध्यम से बहुत अधिक पारिस्थितिक क्षति पहुँचा चुकी हैं।

फिर से, क्या मैं यह वकालत कर रहा हूँ कि हम कार्बन उत्सर्जन में कटौती करना बन्द कर दें? नहीं। लेकिन जब हम उस वैश्विक कारक पर ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर देते हैं, जो समस्या-समाधान के लिए हमारे पारम्परिक 'कोई दुश्मन ढूँढ़ो' दृष्टिकोण में आसानी से फिट बैठता है तो हम कारणों के गहरे आव्यूह (मैट्रिक्स) को नज़रअन्दाज़ करने और समस्या को और बिगाड़ने का जोखिम उठाते हैं, ठीक उसी तरह जैसे हमारी अन्य '... के ख़िलाफ़ लड़ाइयों' (रिक्त स्थान भरिए) ने किया है।

यदि हर कोई दूसरों के स्थानीय स्थलों का सम्मान करते हुए अपने स्थानीय स्थलों की सुरक्षा और अवस्था सुधारने पर अपना प्यार, चिन्ता और प्रतिबद्धता केन्द्रित करे तो इसका एक अतिरिक्त प्रभाव जलवायु संकट का समाधान होगा। यदि हम हर मुहाने, हर जंगल, हर आर्द्रभूमि, क्षतिग्रस्त और मरुस्थलीकृत भूमि के हर टुकड़े, हर मूँगा चट्टान, हर झील और हर पहाड़ को बहाल करने का प्रयास करते हैं तो न केवल अधिकांश ड्रिलिंग, फ्रैकिंग और पाइपलाइनिंग को रोकना होगा, बल्कि जीवमण्डल भी और अधिक लचीला हो जाएगा।

लेकिन ऐसा प्यार, चिन्ता, साहस और प्रतिबद्धता कहाँ से आती है? यह केवल होने वाली क्षति के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध से ही आ सकती है। इसीलिए हमें स्टेला जैसी कहानियाँ बताने की ज़रूरत है। हमें अपनी भूमि की सुन्दरता, दुःख और प्रेम सम्बन्धी अपने अनुभव साझा करने की आवश्यकता है ताकि दूसरों को भी इससे प्रभावित किया जा सके। मुझे यक़ीन है कि स्टेला के शब्दों से आपके मन में कुछ हलचल हुई होगी, भले ही आपका बचपन महासागरों के पास नहीं बल्कि पहाड़ों में बीता हो। जब हम पृथ्वी, पर्वत, जल और समुद्र के प्रति अपना प्रेम दूसरों तक पहुँचाते हैं और जो खो गया है उस पर दुःख प्रकट करते हैं; जब हम तुरन्त समाधान और दोषारोपण की निजवाचक/ आत्मवाचक मुद्रा में आए बिना ख़ुद को और दूसरों को इसकी अनुभवहीनता में जकड़े रखते हैं, तो यह हमारे अन्दर उस गहराई तक प्रवेश कर चुका होता है जहाँ प्रतिबद्धता रहती है। हमारी समानुभूति बढ़ती है। हम अपने होश में लौटते हैं।

क्या यह जलवायु परिवर्तन रूपी समस्या का 'समाधान' है? मैं इसे एक समाधान के रूप में पेश नहीं कर रहा हूँ। हालाँकि, इसके बिना कोई भी समाधान, चाहे वह कितनी भी चतुराई से तैयार की गई नीति क्यों न हो, कारगर नहीं होगा।

मुख्य बिन्दु

- पारिस्थितिकी तंत्र के विनाश में आधुनिक जीवन शैली का हर पहलू शामिल है।
- चूँकि अधिकांश स्थानीय और वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र जटिल अरेखीय प्रणालियाँ हैं, इसलिए उनके विनाश और वैश्विक पारिस्थितिक संकट के लिए एकल कारणों को अलग करना अक्सर असम्भव होता है।
- जटिल प्रणालियों की ग़ैर-रैखिकता समस्या समाधान के प्रति हमारी संस्कृति के सामान्य दृष्टिकोण से टकराती है, जो 'कारण' या अपराधी की पहचान करना और उस अपराधी पर हावी होना, उसे हराना या ख़त्म करना है।
- यह बुनियादी समस्या-समाधान रणनीति पृथक्करण के गहरे वर्णन पर निर्भर है। इस क्रम में एक यह विचार है कि प्रकृति हमारे बाहर मौजूद 'कुछ' है जो हमारे नियंत्रण के अधीन है और मानव प्रगति उस नियंत्रण के अन्तहीन विस्तार में निहित है।
- समस्या-समाधान के इस दृष्टिकोण का एक उदाहरण पारिस्थितिक संकट में एक अलग और सतही रूप से स्पष्ट वैश्विक कारक (जैसे जलवायु परिवर्तन) की भूमिका पर अधिक ज़ोर देने की प्रवृत्ति में देखा जाता है, इसके कारणों के गहरे मैट्रिक्स (विशेष रूप से स्थानीय) को नज़रअन्दाज़ करने के जोखिम पर।
- पारिस्थितिक और जलवायु संकट को हल करने के लिए हममें से प्रत्येक को दूसरों के स्थानीय स्थलों का सम्मान करते हुए अपने स्थानीय स्थलों की सुरक्षा और अवस्था सुधारने पर अपना प्यार, चिन्ता और प्रतिबद्धता केन्द्रित करने की आवश्यकता है।
- स्थानीय स्थलों की सुरक्षा और अवस्था सुधारने की प्रतिबद्धता उनके द्वारा झेली जाने वाली पारिस्थितिक क्षति के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध से आती है। यह व्यक्तिगत सम्बन्ध हमारी समानुभूति विकसित करने में मदद करता है, जो हमारी प्रतिबद्धता का स्रोत होता है।

Notes:

1. This article was first published in July 2016 on https://charleseisenstein.org/about/. It is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License. This version has been edited in minor ways for relevance to the Indian context. It is published in i wonder... with the author's permission.
2. Source of the image used in the background of the article title: Estuary, Karnataka. URL: https://pxhere.com/en/photo/754282. License: CC0 Public Domain.

चार्ल्स एइज़ेंस्टीन एक अमरीकी सार्वजनिक वक्ता और लेखक हैं। उनके कार्य में मानव सभ्यता के इतिहास, अर्थशास्त्र, आध्यात्मिकता और पारिस्थितिकी आन्दोलन सहित विषयों की एक विस्तृत शृंखला शामिल है। वे जिन प्रमुख विषयों का अन्वेषण करते हैं उनमें शामिल हैं प्रति-उपभोक्तावाद, अन्योन्याश्रयता और मिथक और वर्णन/ कथाएँ संस्कृति को कैसे प्रभावित करती हैं। उनसे https://charleseisenstein.org/contact/ पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सुबोध जोशी **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय